Naidunia (Indore), 18th January 2025, Naidunia City, Page – I

आइआइटी इंदौर में स्पिक मैके द्वारा किया जा रहा है तीन दिवसीय आयोजन

पुरुलिया छऊ की शक्तिशाली मुद्राओं और भंगिमाओं से प्रभावित हुए दर्शक

नईदुनिया प्रतिनिधि, इंदौर : छऊ नृत्य की जीवंतता, भाव-भंगिमाओं की बारीकी और कथानक की गहराई लोककला के उस आयाम से परिचित कराती है, जो भारतीय संस्कृति की गहराई को अभिव्यक्त करता है। जब कलाकारों ने भारतीय लोककला की इसी अनूठी धरोहर पुरुलिया छाऊ की अपने मनमोहक प्रदर्शन से प्रस्तुति दी, तो सभागृह में मौजूद दर्शक मंत्रमुग्ध हो उठे। लोकनृत्य और शास्त्रीय कला का महत्व दर्शाते हुए स्पिक मैके द्वारा आइआइटी इंदौर में तीन दिवसीय क्षेत्रीय अधिवेशन आयोजित किया जा रहा है।

इस दौरान कला और संस्कृति का अद्भुत संगम देखने को मिला। इस कार्यक्रम का उद्घाटन आइआइटी इंदौर के निदेशक डा. सुहास जोशी, स्पिक मैके के संस्थापक पद्मश्री किरण सेठ और उपाध्यक्ष पंकज अग्रवाल ने किया। भारतीय शास्त्रीय और लोककलाओं को बढ़ावा देने के उद्देश्य से आयोजित इस अधिवेशन ने पहले ही दिन दर्शकों पर गहरी छाप छोड़ी।

पहले दिन पुरुलिया छऊ नृत्य ने दर्शकों को अपनी पारंपरिकता और कलात्मकता से मोहित कर लिया। महिषासुर मर्दिनी की कथा पर आधारित इस प्रस्तुति में कलाकारों ने दुर्गा द्वारा महिषासुर के वध की कहानी को इतनी जीवंतता से प्रस्तुत किया कि दर्शक सम्मोहित होकर देखते रह गए। इसमें महिषासुर और देवी दुर्गा के बीच के महायुद्ध को विभिन्न रंगों, शक्तिशाली मुद्राओं और भाव-भंगिमाओं के माध्यम से दर्शाया गया।

खासकर, देवी दुर्गा के शक्ति स्वरूप का प्रदर्शन और उनके विजय का दृश्य दर्शकों को भीतर तक प्रभावित किया। इस कार्यक्रम में आइआइटी इंदौर के प्रोफेसर, विद्यार्थियों और देशभर से आए अन्य विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया। विद्यार्थियों के साथ उनके अभिभावक भी कार्यक्रम में सम्मिलित हुए।

आइआइटी इंदौर में स्पिक मैके के कार्यक्रम में नृत्य की प्रस्तुति देते कलाकार • नईदुनिया

कार्यशाला भी हुई आयोजित

इस दौरान विभिन्न कार्यशालाओं का भी आयोजन किया गया, जिसमें विद्यार्थियों को भारतीय कला से जुड़ने का मौका मिला। गौरी दिवाकर ने कथक की बारीकियां सिखाईं, जिसमें भारतीय शास्त्रीय नृत्य की लय और सौंदर्य का अद्भुत समावेश देखने को मिला। वहीं, राजा मियां ने हिंदुस्तानी गायन की कार्यशाला में संगीत प्रेमियों को रागों की गहराई से परिचित कराया। अफ़ज़ल हुसैन ने ध्रुपद गायन में विद्यार्थियों को भारतीय संगीत की गहनता का अनुभव कराया। स्वामी त्यागराजा ने योग और ध्यान के माध्यम से प्रतिभागियों को आंतरिक शांति का मार्ग दिखाया, जबकि हाजी इब्राहिम ने बाग प्रिंटिंग की कला की जानकारी दी। हर कार्यशाला में 25 से 30 विद्यार्थियों की भागीदारी रही। लगभग तीन घंटे तक चली इन कार्यशालाओं ने प्रतिभागियों को न केवल इन कलाओं की तकनीकी जानकारी दी गई, बल्कि भारतीय परंपराओं से जुड़ने का एक अनूठा अवसर भी प्रदान किया गया।

आज होंगे ये कार्यक्रम

शनिवार को अधिवेशन में हठ योग और नाद योग का अभ्यास करवाया जाएगा। इसके साथ ही श्रमदान करवाया जाएगा। जापान की क्लासिकल फिल्म कागे मुशा भी दिखाई जाएगी। वहीं, शामक को पंडित उल्हास काशलक शास्त्रीय गीतों की प्रस्तुति देंगे।